IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

केदारनाथ सिंह के काव्य में सामाजिक-संवेदना

रामबाबू वर्मा और सोनिया यादव
[1]शोधार्थी, विभाग हिन्दी
[2]सह - प्राध्यापक, विभाग हिन्दी
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

केदारनाथ सिंह हिंदी कविता के समकालीन परिदृश्य में उन कवियों में से एक हैं, जिनकी रचनाएँ सामाजिक-संवेदना का गहरा चित्रण करती हैं। उनकी कविताएँ न केवल मानवीय संघर्षों और संवेदनाओं का विस्तार से वर्णन करती हैं, बल्कि समाज की जटिल संरचना और उसके भीतर छिपे हुए अंतर्विरोधों को भी उजागर करती हैं। उनके काव्य में ग्राम्य जीवन की सादगी, शहरीकरण के प्रभाव, प्रकृति के प्रति गहरी निष्ठा, और मनुष्य की आंतरिक पीड़ा का संयोजन मिलता है। वे अपने काव्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही सहजता और स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक सहज ही उनके अनुभवों से जुड़ जाता है।

केदारनाथ सिंह का काव्य भारतीय समाज की जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी कविताओं में गांवों की मिट्टी की खुशबू और वहाँ के जन-जीवन का यथार्थ झलकता है। उदाहरण के लिए, उनकी कविता "बाघ" में न केवल जंगल और बाघ का चित्रण है, बल्कि इसके माध्यम से उन्होंने मनुष्य और प्रकृति के बीच के सामंजस्य को भी उकेरा है। यह कविता प्रतीकात्मक रूप से उन सामाजिक परिस्थितियों को प्रस्तुत करती है, जहाँ मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रकृति का दोहन करता है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप अपने अस्तित्व के लिए खतरा भी उत्पन्न कर लेता है।

उनकी रचनाओं में सामाजिक वर्गभेद, आर्थिक असमानता, और शहरीकरण से उपजी समस्याओं पर गहरी संवेदना दिखाई देती है। "कब्रिस्तान में पंचायत" जैसी कविताओं में उनकी सामाजिक चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने समाज के निचले तबके की आवाज को प्रमुखता दी है और उनकी समस्याओं को कविता के केंद्र में रखा है। उनकी कविताएँ उस वर्ग के लिए एक दर्पण हैं, जो समाज के हाशिए पर है और जिसकी समस्याएँ अक्सर अनदेखी कर दी जाती हैं।

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

प्रकृति के प्रति उनका अनुराग भी सामाजिक संवेदना से जुड़ा हुआ है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में प्रकृति केवल एक पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह समाज का अभिन्न हिस्सा है। उनकी कविताएँ यह संदेश देती हैं कि मनुष्य और प्रकृति का सह-अस्तित्व ही जीवन का आधार है। "नदी" और "पानी" जैसी कविताएँ इस बात को दर्शाती हैं कि जल संकट, प्रदूषण और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी समस्याएँ केवल भौतिक समस्याएँ नहीं हैं, बल्कि ये समाज के नैतिक और सांस्कृतिक पतन का संकेत हैं।

केदारनाथ सिंह के काव्य में शहरीकरण और उसके परिणामस्वरूप ग्रामीण जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का भी उल्लेख मिलता है। उनकी कविता "ट्रेन" एक ऐसा ही उदाहरण है, जिसमें उन्होंने शहरीकरण के चलते गांवों की संस्कृति, परंपराओं और मानव संबंधों के टूटने का मार्मिक वर्णन किया है। यह कविता न केवल आधुनिकता के प्रभावों को रेखांकित करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि कैसे विकास की अंधी दौड़ में मानवीय मूल्यों और सामाजिक संरचनाओं को नजरअंदाज किया जा रहा है।

उनकी कविताएँ प्रेम, करुणा और मानवीय भावनाओं से भी ओत-प्रोत हैं। "आत्मजयी" जैसे महाकाव्य में केदारनाथ सिंह ने मानव जीवन के उद्देश्य और उसके अस्तित्व के गहरे प्रश्नों को उठाया है। यह काव्य एक ओर जहाँ आत्म-चेतना का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के विभिन्न पहलुओं को आत्मसात करने का प्रयास करता है। उनकी रचनाएँ यह बताती हैं कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं।

सामाजिक-संवेदना का उनका दृष्टिकोण केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डाला है। उनकी कविताओं में मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उनके काव्य में जो मानवीय संवेदना है, वह जाति, धर्म, वर्ग और राष्ट्रीय सीमाओं से परे है। उनकी कविताएँ पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि समाज के भीतर व्याप्त समस्याएँ केवल स्थानीय नहीं हैं, बल्कि वे वैश्विक हैं और उनके समाधान के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

केदारनाथ सिंह की भाषा भी उनकी सामाजिक-संवेदना को व्यक्त करने में सहायक है। उनकी कविताओं की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और जनमानस के करीब है। उन्होंने अपनी कविताओं में आम आदमी की भाषा को शामिल किया, जिससे उनकी कविताएँ पाठकों के दिलों तक पहुँचती हैं। उनकी भाषा में स्थानीयता और वैश्विकता का अनूठा मेल मिलता है, जो उनके काव्य को विशेष बनाता है।

उनकी कविताओं का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए भी आशावाद का संदेश देती हैं। उनकी कविताएँ समाज की समस्याओं को उजागर करती हैं, लेकिन इसके साथ

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

ही वे समाधान की ओर भी इशारा करती हैं। उनकी कविताओं में एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो पाठकों को न केवल सोचने पर मजबूर करता है, बल्कि उन्हें सकारात्मक बदलाव की दिशा में प्रेरित भी करता है।

केदारनाथ सिंह का काव्य सामाजिक-संवेदना का एक जीवंत दस्तावेज है। उनकी कविताएँ न केवल समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक हैं, बल्कि वे हमें यह भी सिखाती हैं कि कैसे मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों को जीवित रखा जा सकता है। उनका काव्य आधुनिक समाज की जटिलताओं को समझने और उसे बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। केदारनाथ सिंह की कविताएँ केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे समाज के लिए एक दर्पण हैं, जो हमें आत्म-चिंतन करने और अपने आसपास की दुनिया को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती हैं।

प्रमुख शब्द: केदारनाथ सिंह की काव्य में सामाजिक संवेदना: लोकजीवन, मानवीय करुणा, प्रकृति, ग्रामीण संस्कृति, और सामूहिक अनुभव।"

प्रस्तावना

समकालीन कविता में एक विशिष्ट प्रकार की कलात्मकता पाई जाती है। रुप, शिल्प का यह प्रवेश कविता के सुखद अनुभव हैं और अपने अनुभवों को सुखद कलात्मकता के साथा चित्रित करने के कारण उसकी शक्ति और सामर्थ्य में अभूतपूर्व वृद्धि भी हुई है। मानव जीवन का यथार्थ प्रभावा सम्पन्नता के साथ हमारे सम्मुख हो रहा है। समकालीना कविता में जीवन का यथार्थ अनुभव ही अभिव्यक्ति नहीं होता वरन् प्रतीकात्मक रुप से भी वह सामने आता है।। कविता अपनी एक खास तकनीक और शिल्प के कारण समकालीन कविता में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाती है। केदार जी अत्यधिक संवेदनशील कवि हैं उनकी कविताओं से उनका दर्शन परिलक्षित होता है। कवि इतना अधिक संवेदनशील है कि केले के अंदर की सूक्ष्म आवाज कीड़े-मकोड़ों की हल्की सी सरसराहट से उसे प्रतीत होता है कि कीड़े-मकोड़े किसी गुप्त प्रिंटर से रात भर खबरें छापते हैं मगर उन खबरों का कोई अखबार नहीं छपता -

"कभी रात के तीसरे पहर
जागकर तो देखो
कभी सुनो तो किसी ढ़ेले पर कान लगाकर किस तरह
कीड़ो-मकोड़ों के गुप्त टेलीप्रिंटर पर रात भर छपती रहती हैं
वे सारी खबरें

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

जिन्हें दुनियाँ का कोई अखबार नहीं छापता""

समकालीन कवियों में केदार जी अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी कविताओं में हद्वय एवं मस्तिश्क का पूर्ण सहयोग माना जा सकता है जैसा कि जयशंकर प्रसाद ने हद्वय और बुद्धि दोनों का सामंजस्य ही मनुश्य के लिए उचित बताया है जबकि आज कवि या साहित्यकार समाज में मूल्यों का अन्वेशण करने का प्रयत्न करता है किन्तु उसका सर्वप्रथम ध्यान इस बात में लगा रहता है कि उसकी व्यक्तिगत स्थिति कहाँ पर है? वस्तुतः कह सकते हैं कि नये मूल्यों का समाज में निर्माण न होना भी सामाजिक स्थिति में असहयोग प्रदान कर रहा है किन्तु अभी ऐसी स्थिति भारतवर्श में नहीं है कि अराजकता का माहौल हो जैसा कि अन्य देशों में हो रहा है।

केदार की कविताओं में कहीं-कहीं नाटकीय तत्वों एवं स्थितियों का प्रक्षेपण हुआ है। इनकी कविताओं को समझने के लिए पाठक में धैर्य की आवश्यकता होनी चाहिए क्योंकि अधिकांश कवितायें इतनी गंभीर हैं कि जब उन्हें कई बार पढ़ो तो अचानक उसका अर्थ काँध जाता है।

समकालीन यथार्थ का, उसके भीशण अनुभव का, विश्लेशण करने से केदार संतुश्ट प्रतीत नहीं होते साथ ही साथ अपने आसपास का वातावरण भी उन्हें असंतुश्ट करता है। केदार की एक विशेशता है कि काव्य-रचना के अंत तक आते-आते पाठक से ही प्रश्न पूछते हैं और ऐसा करके वे पाठक के प्रति अपने विश्वास को प्रकट कर देते हैं। जहाँ समकालीन अधिकांश कवियों में अहं की भावना सर्वाधिक है जैसे कि 'मैं सब कुछ जानता हूँ, मुझे-सब-पर-सब-कुछ- कह-लेने-का-हक है' ऐसी स्थितियों से बचते हुए शालीनता के साथ समस्याओं को पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर उसे हल करने हेतु उसे उपदेश नहीं करते हैं वरन् 'ऐसा होता तो', या 'मैं ऐसा कर पाता' या 'अब आप ही बतायें, आदि बातों पर ज्यादा ध्यान देते हैं।

आधुनिक युग में मनुश्य सारी सुख-सुविधाओं के बावजूद अकेला हो गया है तो इस अकेलेपन को सिंह जी भी महसूस करते हैं और उनकी कविता से बार-बार यह बात प्रकट होती है। "कविता मानवीय मूल्यों का पक्ष है और किसी भी तरह के अमानवीयकरण के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया"।" आधुनिक बाजार और प्रचारतंत्र ने वाचिक परंपरा की कविता को अश्लीलता की हद तक बाजारू बना दिया है, पर इसलिए ही उसे उसके जीवंत-रूप रचने गढ़ने का महत्व है और जोखिम कुछ ज्यादा ही प्रासंगिक लगता है।

अधिकांश समकालीन कविता ने अपने उत्कृश्टतम रूप में भी 'प्रकृति' को अपनी नागरिक समस्याओं से जुड़े एक काव्य-विशय के रूप में लिया है। आधुनिक युग के विकसित चरण में प्रकृति की सत्ता को इतने सीमित क्षुद्र रूप में देखने की कोशिश के समाजशास्त्रीय कारणों की तफसील में गये बगैर भी यह निशंक कहा जा सकता है कि 'कविता के अपने तौर-तरीकों से ज्यादा महत्वपूर्ण कविता की सिकुड़न की नई परिस्थिति को मानने के पीछे एक तरह का घुटनाटेक दृश्टिकोण था, जिसने एक तरफ तो साम्य और स्वतंत्रता के पश्यंति

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

मूल्यों को बतौर नुस्खे के ग्रहण किया और दूसरी ओर यह माना कि प्रकृति की हमारी अपनी कविता के संस्कार से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हमारा नया विचार है"।

यह कहना उपयुक्त होगा कि समकालीन काव्य में केदार की कवितायें प्रकृति के साथ एक जीवंत संपर्क को उजागर करने वाली हैं। सिंह जी अपनी कविताओं में भौतिक जगत की किसी वस्तु को उठाते हुए उसे अपने अंदर डूबकर मन की जटिल गहराइयों को खोजते हैं किंतु आत्मनिश्ठता का स्पर्श करते-करते पुनः उसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जहाँ से उसे प्रारम्भ किया था। प्रत्येक युग का काव्य समाज के मूल्यों पर निर्भर करता है साथ ही साथ काव्य पर सामाजिक परिवेश का भी फर्क पड़ता है क्योंकि समाज के मूल्यों से ही काव्य के संस्कार निर्धारित होते हैं। मनुश्य की चेतना जहाँ एक ओर नये मूल्यों का अन्वेशण करती है वहीं दूसरी ओर तत्कालीन सामाजिक चिंतन भी ग्रहण करती है। देखा जाये तो मनुश्य की अंतः प्रवृत्तियों ही जीवन को निर्धारित करती हैं अतः जब तक मनुश्य की अंतःप्रवृत्तियों का विकास नहीं होगा तब तक मनुश्य की संवेदना का विकास भी नहीं हो पायेगा। केदारनाथ सिंह के अनुसार, "समाज के प्रत्येक सदस्य की छोटी से छोटी चेतन किया किसी न किसी अशं में सामाजिक होती है। फिर कविता तो समाज के सबसे अधिक संवेदनशील व्यक्ति की चेतन किया है। उसकी सामाजिकता असंदिग्ध है। कविता अपने अनावृत रूप में केवल एक विचार, एक भावना, एक अनुभूति, एक दृश्य इन सब का कलात्मक संगठन अथवा इन सब के अभाव की तीखी पकड़ होती है। यह पकड़ जितनी ही वास्तविक होगी, कवि का संवेद्य उतना ही गहरा और प्रभावशाली होगा"।

केदार समकालीन समय में बढ़ रही स्वार्थपरता एवं प्रत्येक व्यक्ति की चुप्पी से व्यथित हैं क्योंकि आज के समय में हर व्यक्ति अपने आप में व्यस्त है और सबसे बड़ी बात यह कि कोई किसी से मतलब नहीं रखना चाहता है। महानगर की आपाधापी भरी जिंदगी में तो और भी बुरी स्थिति है जहाँ जीवन मशीनवत चलता जा रहा है और ऐसा जीवन जीने के लिए हर व्यक्ति मजबूर होता जा रहा है लेकिन कवि इस बात को मानता है कि जीवन में कितनी भी मुश्किल हो किंतु मनुश्य को साहस नहीं छोड़ना चाहिए-

"ठंड से नहीं मरते शब्द
वे मर जाते हैं साहस की कमी से कई बार मौसम की नमी से मर जाते हैं शब्द"

कवि सामाजिक परिवेश को देखते हुए अत्यधिक व्यथित है, उसे ऐसा प्रतीत होता है कि सारा युगबोध ही अंधकारमय हो गया है -

"काले अक्षर काली रात कौन करे अब किससे बात काली जनता काला कोध काला-काला है युगबोध""

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि मुक्तिबोध की तरह केदार का मन भी समाज में फैले असामाजिक तत्वों से बुरी तरह आकांत है और ऐसा स्वाभाविक भी है कि कोई भी संवेदनशील कवि बिना प्रतिक्रिया किये हुए नहीं रह सकता है

'ठायें-ठायें

बजता रहा मेरे सीने में अगली सुबह उसी को एक आदमी के भव्य ललाट पर चमकते हुए देखा

ऐसी बिगड़ी हुई सामाजिक परिस्थितियों में कवि समस्त काव्य-रचना को व्यर्थ मानता है साथ-साथ उसे सारी मुश्किलों की एक ही जड़ दिखाई पड़ती है और वह है मानवीय संवेदना की कमी। सभी अपने आप में टूटे-बिखरे हुए हैं -

''शब्द सारे धूल हैं, व्याकरण सारे ढ़ोंग किस तरह खामोश हैं चलते हुए वे लोग पूछता है एक चेहरा दूसरे से

मौन बचा हो साबूत-ऐसा कहाँ है वह-कौन?"

"कह देना पिता से सब ठीक-ठाक है

हवा है, पानी है

बस्ती के बाहर एक छोटा सा कब्रिस्तान है सब ठीक-ठाक है।

केदारनाथ की कवितायें उनके अन्तर्जगत के परिशीलन की अनुभूतियों से सम्प्रक्त हैं। उनके काव्य में सामान्य वर्ग की हताशा, कुंठा, विजड़न और गत्यावरोधों का अवतरण हुआ है। समकालीन कवियों में ये सर्वाधिक आस्था एवं विश्वास के कवि हैं जो निराशा एवं हताशा में भी आशा एवं विश्वास की उम्मीद नहीं छोड़ते हैं। उन्हें विश्वास है कि जो समय के धागे सुशुप्तावस्था में है उनके उठने का समय हो गया है

और समाज में जो उपेक्षित एवं दबे-कुचले जन हैं, जिस दिन वे अपने अधिकारों के लिए उठ खड़े होंगें, उस दिन से दुनियाँ की कोई ताकत उन्हें उनके अधिकारों से वंचित नहीं कर पायेगी।

"उठो मेरे सोये हुए धागों उठो उठो कि दर्जी की मशीन चलने लगी है उठा कि धोबी पहुँच गया है घाट पर उठो कि नंग-धड़ग बच्चे जा रहे हैं स्कूल उठो मेरी सुबह के धागों और मेरी शाम के धागों, उठो झाड़न में मोजों में टाट में दरियों में दबे हुए धागों उठो कि कहीं कुछ गलत हो गया है उठो कि इस दुनियों का सारा कपड़ा फिर से बुनना होगा"10

साधारण वर्ग को अपने साथ में लेने की प्रवृत्ति सिंह जी की सबसे बड़ी विशेशता है। बबूल जो कठिन परिस्थितियों में उत्पन्न होता है किन्तु अपनी गरिमा से युक्त जीवन यापन करता है उसी प्रकार साधारण वर्ग भी बड़ी मुश्किलों से जीवन यापन करता है और अपने लिए समाज में जगह बनाता है। समाज के उन लोगों को सामने लाना केदार जी का उद्देश्य है जिन पर शायद ही किसी की नजर जाती हो। किसी भी मनुश्य की चेतना

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

आंतरिक सत्य का ही एक रुप होता है। व्यक्ति की चेतना का सीधा प्रभाव उसकी संवेदना पर पड़ता है। बहुत सी बातें सामाजिक परिवेश से भी साहित्यकार ग्रहण करता है एवं समाज-दर्शन से जीवन बोध प्राप्त करता है। सामाजिक संवेदन की तीव्र अनुभूतियाँ आज की काव्य-चेतना में विद्यमान हैं। इनकी कविता में सामाजिक गहरे उलझाव, आक्रामक टकराहटों और तनावों का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है और इतनी संवेदनशील कवितायें हैं कि सामाजिक परिवेश के बदलाव की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो उठती है। समाज पर साहित्यकार के संवेदन का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है और वैसे भी साहित्य से समाज परिवर्तन की उम्मीद बहुत बड़ी बात होती है किंतु प्रभाव तो पड़ता ही है, चाहें अप्रत्यक्ष रूप से ही सही।

कलाकार या साहित्यकार पाठक को या समाज को उसकी समकालीन स्थितियों के बारे में सचेत कर देता है। अज्ञेय के शब्दों में, "वह चिंतन के विकास में उतना नहीं जितना संवेदन के विकास में योगदान दे रहा होता है"। कवि वर्ग असमानताओं को लेकर अत्यधिक क्षुब्द है। सामाजिक असमानताओं के ओर कवि संकेत करता हुआ

इसमें लिखा है- "सूर्यास्त के कितने समय बाद सूर्य उदय होना शुरू होता है"

एक थके हुए आदमी की पलकें

बिस्तर में जाने के कितनी देर बाद उचट जाती है एक भरे-पूरे आदमी की नींद""

सामान्य से भी कमतर निम्न वर्ग जो कीड़े-मकोड़ों की तरह

जीवन-यापन करने के लिए मजबूर है कवि का मन उद्वेलित होता है उनकी जीवन शैली को देखकर और संवेदना उसे कचोटती है इसीलिए उस निम्न वर्ग को कीड़े-मकोड़ों का उपमान देकर कवि व्यंग्य करता है कि कीड़ों का मरना उसे इतना क्यों परेशान कर रहा है- " क्या लेबनान में जो कुछ घटित हुआ है वह रूक जाता "?"

सांकेतिक शैली में कवि कीड़ों के मरने से व्यथित नहीं है बल्कि वह उस मनुश्यता को बचाने के लिए प्रयत्नशील है जो दुनियों की व्यवस्था सुधारने में ही अपना जीवन खत्म करके भी कुछ भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं- "कीड़े तो मरते रहते हैं

हर पल हर क्षण दुनियों को कुछ और साफ-सुंदर करने को मर जाते हैं मरना उनका सुंदरता के हित में है फिर क्यों होती है पीड़ा

जो वर्ग हर प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त है उसे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि समाज में कितने लोग ऐसे हैं जो अपनी आवाज उठाने के लिए प्रयत्नशील हैं उनकी सहायता के लिए आगे आना चाहिए और बाजारीकरण से भी कवि व्यथित है-

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

"बाजार में धूल थी
न जनता
दोनों को साफ कर दिया गया था"

संदर्भ-ग्रंथ-

[1]. सिंह, केदारनाथ, तालस्ताय और सायकिल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम स.2005, पृ 67
[2]. बाजपेई, अशोक, कविता प्रकाशन, प्रथम स.1992, पृ 59 का जनपद, राधाकृश्ण
[3]. वही
[4]. व्ही
[5]. सिंह, केदारनाथ, तीसरा सप्तक, स. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, आठवाँ सं.2003, पृ.122
[6]. सिंह, केदारनाथ, अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम स.1988 पृ.102
[7]. वही पृ.95
[8]. वही पृ.89
[9]. वही पृ.76
[10]. सिंह, केदारनाथ, यहाँ से देखो, राधाकृश्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम स.1983 पृ. 50
[11]. वही पृ.32
[12]. वही पृ.32
[13]. वही पृ.35
[14]. वही पृ.39